"अवसर": शोध की अभिव्यक्ति के लिए लेखन कौशल

"AWSAR": Augmenting writing skill articulating Research

के. बी. भूषण[1], गौरव जैन[2], रश्मि शर्मा[3] और मनीष मोहन गोरे[4]

[1, 2, 4] वैज्ञानिक, विज्ञान प्रसार, A 50, सेक्टर 62, नोयडा, उत्तर प्रदेश

[3]वैज्ञानिक E, राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी संचार परिषद, विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली

[1] bharatuhf@gmail.com, [2] gauravjayna@gmail.com,
[3] r.sharma72@nic.in, [4] mmgore1981@gmail.com

सारांश:

शोध की अभिव्यक्ति के लिए लेखन कौशल हेतु अवसर (Augmenting Writing Skill for Articulating Research) परियोजना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने बनाई है। युवा शोधकर्ताओं में लोकप्रिय विज्ञान लेखन के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने, उसे सशक्त बनाने और विज्ञान संचार/लोकप्रियकरण की संस्कृति सृजित करने की दृष्टि से यह पहल की गई है। इस योजना के अंतर्गत डीएसटी ने वर्ष 2018 से राष्ट्रीय स्तर की एक वार्षिक प्रतियोगिता के आयोजन की घोषणा की थी। इसमें विज्ञान संचार को बढ़ावा देने और नए विज्ञान संचारकों को तैयार करने के लिए विज्ञान व प्रौद्योगिकी की विविध धाराओं में पी.एच.डी. या पोस्ट डाक्टोरल कर रहे शोधार्थियों से उनके शोध विषयों पर विज्ञान आलेख आमंत्रित किए गए थे। चूंकि पी.एच.डी. या पोस्ट डाक्टोरल के स्कॉलर हार्डकोर साइंस के विद्यार्थी होते हैं और विज्ञान संचार और लेखन से वे सर्वथा अनजान रहते हैं इसलिए उन्हें इस विधा से परिचित कराने और विज्ञान संचार का वातावरण विकसित करने के उद्देश्य से अवसर प्रतियोगिता में प्रविष्टि भेजने से पहले देश के अनेक अंचलों में ओरिएंटेशन कार्यशालाओं के आयोजन इस वर्ष किए गए। इन कार्यशालाओं में प्रतिभागी शोधार्थियों को विज्ञान लेखन के सिद्धांतों, मापदंडों, बारीकियों, डूऽज और डोंट आदि से रुबरु किया गया ।

ABSTRACT:

AWSAR stands for "Augmenting Writing Skills for Articulating Research". This is an annual competition announced by DST in 2018. Under this initiative, PhD and post-doctoral scholars in science and technology streams are encouraged to write popular science article during the tenancy of their scholarship/fellowship. This initiative foster, strengthen and create scientific temper through popular science writing and creating a culture of science communication/popularisation among the research scholars. Though the PhD scholars & Post Doc Fellows are hardcore researcher & ignorant about science communication, this programme will strengthen the ecosystem of science communication. The scholars also get insight of popular science writing, its methodology, does' & don'ts etc in several orientation workshops organized across the country.

Keywords: AWSAR, Scientific temper, popular science writing, Science Communication

प्रस्तावना:

पिछले दो दशकों में भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति रही है। हालाँकि, देश की इस वैज्ञानिक प्रगति की प्रेरक कहानियाँ आम तौर पर उसकी कई वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं और संस्थानों में हैं या वैज्ञानिक समुदाय के लिए बौद्धिक पोषण के रूप में समीक्षात्मक पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। इन कहानियों को आकर्षक रूप में जनता तक पहुंचाना चाहिए। इस संदेश को शोधार्थियों के अलावा और कौन बेहतर तरीके से आम जनता तक पहुंचाने का काम कर सकता है।

पी.एच.डी. शोधार्थियों और पोस्ट-डॉक्टरल फेलो दुनिया भर के वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र की रीढ़ हैं और जिसका देश में वैज्ञानिक मनोवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह से संभावित उपयोग नहीं किया जा रहा है। अखिल भारतीय उच्चतर शिक्षा सर्वेक्षण (2017-2018), मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा दिए गए आँकड़ों के अनुसार भारत में हर साल 34,400 शोधार्थियों को पी.एच.डी. प्रदान की जाती हैं। जिसमें विज्ञान के क्षेत्र में हर साल 8880 शोधार्थियों को और 4907 शोधार्थियों को प्रोधोगिकी के क्षेत्र में पी.एच.डी. प्रदान की गयी [1]।

इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए कि एक लोकप्रिय विज्ञान लेख लिखना एक कला और विज्ञान दोनों है, और भारत में विज्ञान की सार्वजनिक समझ में मौजूद दूरी को दूर करने के लिए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) इस तरह की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए विज्ञान के प्रभावी संचार और विज्ञान तथा समाज के बीच की खाई को एक नई पहल "अवसर" के द्वारा भरने की उम्मीद रखता है जिसके लिए लेखन कौशल को संवर्धित करना है।

विज्ञान की सार्वजनिक समझ में महत्वपूर्ण और स्थायी प्रभाव डालने के लिए, पी.एच.डी. और पोस्ट-डॉक्टोरल की डिग्री ले रहे विद्यार्थियों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी में छात्रवृत्ति के दौरान तथा विद्वानों को नए डिजाइन किए गए कार्यक्रम के तहत कार्यकाल के दौरान एक लोकप्रिय लेख लिखने की ओर प्रोत्साहित करने के लिए डीएसटी के आर्टिकुलेटिंग रिसर्च (AWSAR) के माध्यम से प्रयत्न किया गया है।

'अवसर' क्या है?

देश में विज्ञान संचार का माहौल सृजित करने और विज्ञान की समाज से नजदीकी बढ़ाने के उद्देश्य से अवसर पुरस्कार योजना का आरंभ किया गया। इस पहल के अंतर्गत विज्ञान और प्रौद्योगिकी में शोधरत पी.एच.डी. और पोस्ट डाक्टोरल के विद्यार्थियों को उनके शोध सामग्रियों पर एक लोकविज्ञान लेख लिखने को प्रोत्साहित किया जाएगा। इस योजना और राष्ट्रीय प्रतियोगिता से संबंधित सूचना राष्ट्रीय अखबारों और पत्रिकाओं में दी गया। डीएसटी प्रत्येक वर्ष पी. एच.डी. के 100 शोधार्थियों और 120 पोस्ट डॉक्टरल फेलो को यह पुरस्कार प्रदान करेगा। इसमें नकद राशि एवं प्रशंसा प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा और इनके अलावा उन विजेताओं के विज्ञान आलेखों को प्रकाशित भी किया जाएगा। पुरस्कार श्रेणियों में 100 सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों (पी.एच.डी. श्रेणी) एवं 20 सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों (पोस्ट डाक्टरल फेलो श्रेणी) के लिए रु10,000/- का मौद्रिक पुरस्कार शामिल है, साथ ही सर्टिफिकेट दिया जाएगा। पी.एच.डी. श्रेणी के सर्वश्रेष्ठ तीन लेखो को क्रमशः रु 100,000/-, रु 50,000/- एवं रु 25,000/- का नकद पुरस्कार दिया जाएगा और पोस्ट डाक्टरल फेलो श्रेणी के एक उत्कृष्ठ लेख को रु 1,00,000/- का नगद पुरस्कार दिया जाएगा।

"अवसर" के प्रमुख उद्देश्यः

1. उच्च अध्ययन करने वाले युवाओं को अपने शोध कार्य के आधार पर कम से कम एक विज्ञान लेख प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करना।
2. लोकप्रिय विज्ञान लेखन के माध्यम से वैज्ञानिक स्वभाव को मजबूत करना और विद्वानों के बीच विज्ञान संचार/लोकप्रियकरण की संस्कृति का निर्माण करना।
3. प्राकृतिक, भौतिकी, गणितीय और सूचना विज्ञान, अनुप्रयुक्त विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और बहु-विषयक विज्ञान के विशिष्ट पहलुओं पर शोधकर्ताओं की पहल और उत्पादकता को पहचानना।
4. लोकप्रिय विज्ञान लेखन में शुरुआती कैरियर शोधकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित करना।

अवसर कार्यक्रम को निष्पादित करने की कार्यप्रणाली

इसके शुरूवाती दौर में, इस कार्यक्रम में पी.एच.डी. विद्वानों और पोस्ट-डॉक्टर फैलो को प्रोत्साहित करने के लिए उनकी थीसिस/शोध कार्य के आधार पर कम से कम एक विज्ञान लेख प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। लेखों को आमंत्रित करने के लिए कार्यक्रम के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम का उपयोग किया गया।

"अवसर" कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु निम्नलिखित कार्यप्रणाली का उपयोग किया जाता है:

1. अवसर कार्यक्रम का व्यापक प्रचार सुनिश्चित करने के लिए प्रिंट मीडिया (प्रमुख अखबारों, विज्ञान पत्रिकाओं, ब्रोशर, फ्लायर्स इत्यादि में विज्ञापन), डिजिटल मीडिया (सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन विज्ञापन, खोज इंजन अनुकूलन, ई-मेलस आदि) और मेल/पोस्ट संचार के माध्यम से विश्वविद्यालयों (केंद्रीय, राज्य और निजी) में व्यापक प्रचार।
2. उन शोध विद्वानों से भी प्रविष्टियां आमंत्रित की गई जो अपने शोध को इस तरह से प्रकाशित करना चाहते हैं जो गैर-वैज्ञानिक समुदाय और पाठको को रुचिकर लगे। यह प्रविष्टियां व्यक्तिगत शोधकर्ता द्वारा किए गए शोध पर आधारित होना चाहिए। लेख पूरे शोध या शोध के भाग पर हो सकता है, लेकिन यह क्षेत्र की सामान्य समीक्षा नहीं होनी चाहिए और अनुसंधान के हिस्से के रूप में नए ज्ञान का घटक होना चाहिए।
3. किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय/संस्थान में विज्ञान और प्रौद्योगिकी और पोस्ट डॉक्टर फेलो में उच्च अध्ययन करने वाले भारतीय नागरिकों से प्रविष्टियां आमंत्रित की गई थी।

चूंकि पी.एच.डी. या पोस्ट डाक्टोरल के स्कालर हार्डकोर साइंस के विद्यार्थी होते हैं और विज्ञान संचार और लेखन से वे सर्वथा अनजान रहते हैं इसलिए उन्हें इस विधा से परिचित कराने और विज्ञान संचार का वातावरण विकसित करने के उद्देश्य से अवसर प्रतियोगिता में प्रविष्टि भेजने से पहले देश के अनेक अंचलों में ओरिएंटेशन कार्यशालाओं का आयोजन इस वर्ष किया गया। इन कार्यशालाओं में प्रतिभागी शोधार्थियों को विज्ञान लेखन के सिद्धांतों, मापदंडों, बारीकियों, डूज और डोंट आदि से रुबरु किया गया। इस योजना के आरम्भ वर्ष में देहरादून, कोलकाता, चंडीगढ़ और चेन्नई जैसे देश के चार महानगरों में ओरिएंटेशन कार्यशालाएं आयोजित की जा चुकी हैं तथा इन सभी कार्यशालाओं में कुल 512 प्रतिभागियों

(पी.एच.डी. और पोस्ट डाक्टोरल फेलो दोनों श्रेणियों के प्रतिभागी) ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

निष्कर्ष

प्रविष्टियां आमंत्रित करने के लिए आवेदकों के लिए वेब www.awsar-dst.in का निर्माण किया गया जिसमे अवसर की सारी कार्यप्रणाली, संपादन नीति, रिव्यु प्रक्रिया, स्वीकृति, प्रारूप लेख, लेखकी संरचना एवं फॉर्मेट इत्यादि को विस्तार से बताया गया [2]। दोनों श्रेणियों (पी.एच.डी. और पी.डी.एफ.) के अंतर्गत अवसर के लिए कुल 4128 शोधार्थियों ने अपना पंजीकरण AWSAR पोर्टल पर कराया जिसमें पी.एच.डी. श्रेणी के अंतर्गत: 3673 एंव पी.डी. एफ. श्रेणी के अंतर्गत 455 शोधार्थी थे। AWSAR पोर्टल पर कुल 2629 लेख प्राप्त हुए जिसमें से पी.एच.डी. शोधार्थियों से प्राप्त लेख 2174 एंव पी. डी.एफ. शोधार्थियों से प्राप्त लेख की संख्या 455 थी । प्रारंभिक समीक्षा के बाद 1755 लेखों को दो विशेषज्ञों को मूल्यांकन के लिए भेजे गए। प्रविष्टियों का मूल्यांकन निम्नलिखित मापदंडों के आधार पर दो स्वतंत्र विशेषज्ञों द्वारा किया गया:

1. लेख सही और निष्पक्ष रूप से लेखक के शोध के जटीलता का सरल गैर–तकनीकी भाषा में अनुवाद करता हो।
2. सामान्य दर्शकों के लिए विज्ञान की व्याख्या।
3. विशेष रूप से छात्रों/युवाओं में विज्ञान लेख की रुचि निर्माण करता है।
4. लेख उपयुक्त रूपकों और उपमाओं का उपयोग करता है और रोजमर्रा के अनुभव से संबंधित हो।
5. लेख स्पष्ट परिचय और निष्कर्ष के साथ विषय/अनुसंधान की स्पष्ट समझ प्रदान करता हो।

शोध की अभिव्यक्ति के लिए लेखन कौशल को प्रोत्साहन (अवसर) नामक राष्ट्रीय प्रतियोगिता के तहत चुने गए चार युवा वैज्ञानिकों को 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के मौके पर पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रतियोगिता के पी.एच.डी. वर्ग के अंतर्गत एक लाख रुपये का प्रथम पुरस्कार आशीष श्रीवास्तव (स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग ऐंड टेक्नोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ मुंबई), 50 हजार रुपये का द्वितीय पुरस्कार अजय कुमार (आई.आई.टी.–मद्रास) और 25 हजार रुपये का तृतीय पुरस्कार नबनीता चक्रबर्ती (केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता) को दिया गया।

पोस्ट डॉक्टोरल वर्ग में सर्वश्रेष्ठ लेखन के एक लाख रुपये के पुरस्कार के लिए डॉ. पॉलोमी सांघवी (टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च, मुंबई) को चुना गया। पी.एच.डी. वर्ग के 100 युवा विज्ञान संचारकों और 20 अन्य पोस्ट डॉक्टोरल शोधार्थियों में प्रत्येक को 10 हजार रुपये का पुरस्कार भी दिया गया इस प्रतियोगिता में पी.एच.डी. एवं पोस्ट डॉक्टोरल शोधार्थियों समेत दो वर्गों में पुरस्कार दिए जाते हैं।

तालिका: चयनित आलेखों का राज्यवार वितरण (पी.एच.डी. और पी.डी.एफ. श्रेणी)

राज्य	पी.एच.डी. श्रेणी	पी.डी.एफ. श्रेणी
महाराष्ट्र	13	3
चंडीगढ़	4	0
पश्चिम बंगाल	13	1
दिल्ली	8	3
असम	3	2
तमिलनाडु	15	0
कर्नाटक	19	9
उत्तर प्रदेश	5	0
हरियाणा	1	0

झारखंड	2	0
उत्तराखंड	1	0
आंध्र प्रदेश	1	0
बिहार	1	0
गोवा	2	0
गुजरात	3	1
तेलंगाना	5	0
हिमाचल प्रदेश	2	0
पंजाब	3	0
केरल	1	0
राजस्थान	1	0
ओडिशा	0	1
जम्मू और कश्मीर	0	1
	103	21

आकृतिः चयनित आलेखों का राज्यवार वितरण (पी.एच.डी. और पी.डी.एफ. श्रेणी)

मुख्य रूप से निम्नलिखित विषय श्रेणियों में लेख आये थे:

1. स्वास्थ्य विज्ञान
2. जैव विज्ञान
3. कृषि विज्ञान
4. भौतिकी विज्ञान
5. रासायनिक विज्ञान
6. प्रोद्योगिकी
7. गणित
8. पृथ्वी एवं वायुमंडल विज्ञान

इनमें स्वास्थ्य एवं इनसे सम्बंधित शोधों की प्रविष्टियों की संख्या सबसे ज्यादा (549) थी जबकि सबसे कम गणित एवं सम्बंधित शोधों की संख्या सबसे कम थी (8).

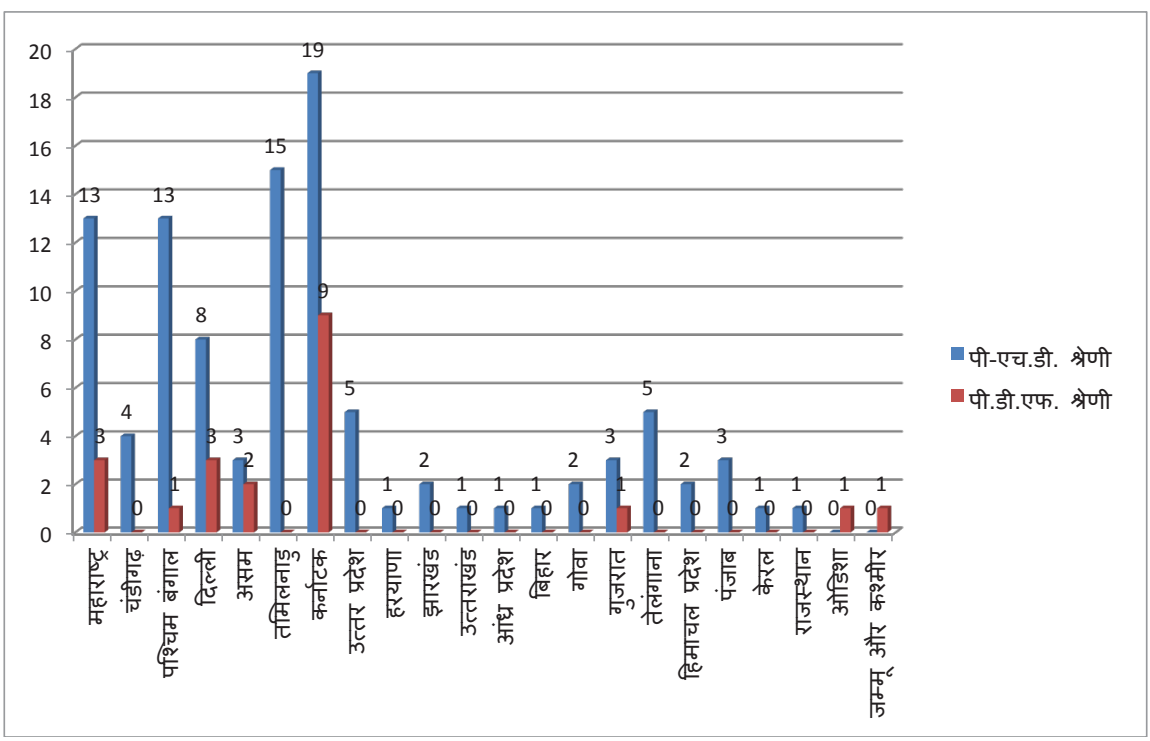

प्रस्तुत कहानियों का विषयवार वितरण

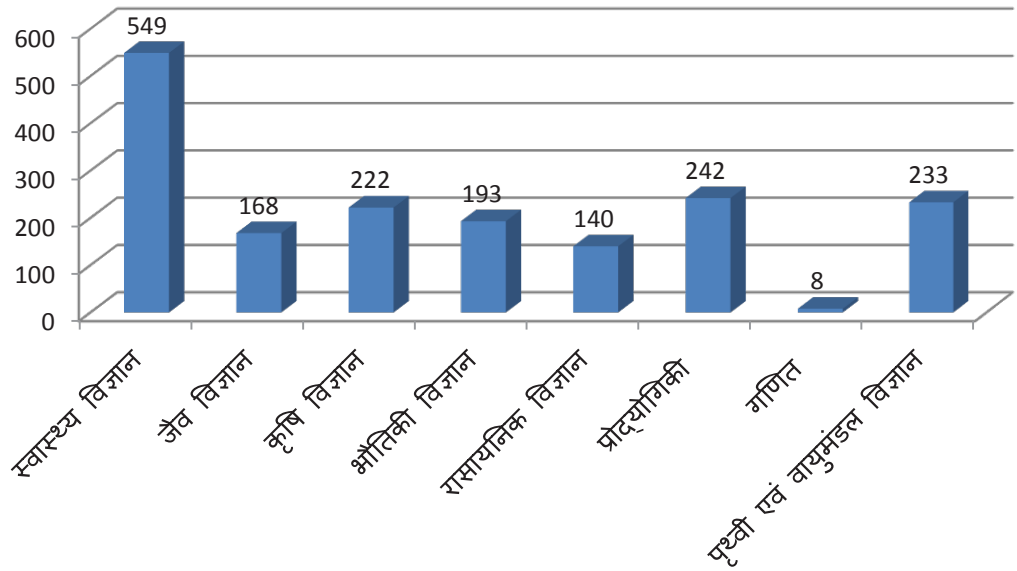

'अवसर' योजना की सार्थकता:

भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में पिछले दो दशकों में आशातीत उपलब्धियां दर्ज की हैं। मगर दुर्भाग्यवश इनसे जुड़ी समग्र जानकारी और सफल गाथाएं कुछ एक प्रयोगशालाओं में और पीयर रिव्यूड जर्नलों में सिमटकर रह जाती हैं। इन्हें वैज्ञानिक समुदाय के लोग ही समझ पाते हैं और आम आदमी इस महत्वपूर्ण जानकारी से वंचित रह जाता है। विज्ञान को जन-जन तक पहुचाना और विज्ञान के इन प्रयोगों और आविष्कारों की जानकारी को सरल सहज भाषा में सामान्य लोगों तक पहुंचाना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि यह आम जनता में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने महत्वपूर्ण में होगा। डीएसटी की 'अवसर' योजना तथा इनसे उभरकर भविष्य में आगे आने वाला युवा वैज्ञानिकों का समुदाय इस जरुरत को पूरा करने में समर्थ होगा।

"राष्ट्रीय विज्ञान प्रौद्योगिकी संचार परिषद के अंतर्गत शुरू किए गए 'अवसर' कार्यक्रम का उद्देश्य अखबारों, पत्रिकाओं, ब्लॉग्स और सोशल मीडिया के जरिये युवा वैज्ञानिकों की लेखन क्षमता का उपयोग विज्ञान को लोकप्रिय बनाने तथा समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए करना है। इस परियोजना का उद्देश्य विज्ञान को सरल भाषा में लोगों तक पहुंचाने के लिए युवा वैज्ञानिकों के लेखन कौशल को प्रोत्साहित करना है। इससे वैज्ञानिक शोधों की जानकारी का प्रसार रोचक ढंग से ऐसी सरल भाषा में किया जा सकेगा, जिसे लोग आसानी से समझ सकें। उम्मीद की जा रही है कि इस पहल से भारत में हो रहे वैज्ञानिक शोधों और उनके महत्व के बारे में जागरूकता के प्रसार के साथ-साथ नए विज्ञान संचारक तैयार करने में भी मदद मिल सकेगी।

अवसर कार्यक्रम के अंतर्गत देश के शोध संस्थानों, विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में संचालित हो रहे शोध की जानकारी जब आमजन की भाषा एवं

सरल शब्दों में लोगों तक पहुंचेगी तो इसका लाभ समाज के सभी तबको को मिलेगा। अभी तक शोध की जानकरी तकनीकी भाषा में विशेष शोध समुदाय के बीच साझा हुआ करती थी। लेकिन डीएसटी की यह विशेष योजना एक ऐसे सुनहरे अवसर के रूप में हमारे सामने हैं जो शोध की जानकारी और शोध से जुड़े सामाजिक पहलुओं को जनमानस तक पहुंचा सकती हैं देश में चल रहे शोध से उधमियों को अनेक स्थानीय व्यवहारिक समस्याओं के समाधान ढूंढने में सहायता मिलती हैं। अवसर योजना से निकलकर आए शोध के पापुलर आलेख स्वरुप तक देश के उधमियों की सीधी पहुंच होगी। इसके साथ-साथ अवसर योजना से उधमियों को बोध्दिक व तकनीकी लाभ हासिल होंगे।

लोकप्रिय विज्ञान लेखन के क्षेत्र में किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं होने के कारण युवा शोधकर्ताओं विज्ञान संचार की इस विधा पर ध्यान नहीं देते हैं। अवसर (AWSAR) योजना का प्रोत्साहन पी.एच. डी. शोधार्थी और पोस्ट डॉक्टरल फैलो को विज्ञान लेखन के लिए प्रेरित करेगा। इसके अलावा इस योजना के अंतर्गत डीएसटी द्वारा आयोजित कार्यशालाओं से लोकप्रिय प्रारूप में विज्ञान लेखन में कौशल विकास में भी मदद मिलेगी।

इस योजना से जुड़े आरंभिक आंकड़े यह दर्शाते हैं कि पी.एच.डी. शोधार्थियों और पोस्ट डॉक्टरल फैलो की विज्ञान लेखन में रूचि है। लोकप्रिय विज्ञान प्रारूप में एक लेख लिखना न केवल विज्ञान है बल्कि यह एक कला भी है, डी.एस.टी. द्वारा 'लोकप्रिय विज्ञान लेख कैसे लिखें' विषय पर आयोजित कार्यशालाएं निश्चित रूप से उनके कौशल में वृद्धि करेंगी।

शोधार्थियों के इस सकारात्मक रुझान को देखते हुए डी.एस.टी. ने वर्ष 2018 में आयोजित 04 कार्यशालाओं की संख्या बढ़ाकर वर्ष 2019 में 8-10 करने की योजना बना रहा है। जैसा कि दृष्य-श्रव्य संचार सामग्री सभी आयु वर्ग के लोगों में अधिक मात्रा में ज्ञान की वृद्धि करती है, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर विज्ञान प्रसार द्वारा आयोजित कार्यशालाओं के माध्यम से पी.एच.डी. श्रेणी में पुरस्कृत 100 और पोस्ट-डॉक्टोरल श्रेणी में पुरस्कृत 20 विजेताओं को विज्ञान फिल्में बनाने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

अभिस्वीकृति

वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए लेखन कौशल को संवर्धित करना एक नई पहल है, जो राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद (NCSTC) प्रभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST) द्वारा समर्थित है जो वैज्ञानिक भाइचारा बढ़ाने के लिए विभिन्न विश्वसनीय कार्यक्रमों को विकसित करने में सक्रिय कार्य कर रही है। अवसर ने पी.एच.डी. शोधार्थी (Ph.D) और पोस्ट-डॉक्टोरल फैलो (PDF) की अविकसित क्षमता का उपयोग करके आमजन तक इस अनुसंधान को संप्रेषित करके मौजूदा अंतर को कम करने की परिकल्पना की है। इस कार्यक्रम का समन्वय विज्ञान प्रसार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST)के एक स्वायत्त संस्थान द्वारा किया जा रहा है।

सन्दर्भ

[1] http://aishe.nic.in/aishe/viewDocument.action?documentId=245

[2] https://www.awsar-dst.in/